प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय छः

उद्धार

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

1. परिचय (1:01) 4

2. क्षमा (3:04) 4

A. पाप की समस्या (3:28) 4
1. पाप की परिभाषा (4:26) 4
2. पाप की उत्पत्ति (9:40) 5
3. पाप के परिणाम (12:42) 5

B. दिव्य अनुग्रह (16:52) 6
1. पिता (18:05) 6
2. पुत्र (21:21) 7
3. पवित्र आत्मा (22:49) 7

C. व्यक्तिगत उत्तरदायित्व (25:16) 8
1. शर्तें (26:2) 8
2. साधन (34:14) 8

3. पुनरुत्थान (46:58) 10

A. श्राप (47:38) 10

B. सुसमाचार (52:19) 11
1. पुराना नियम (53:07) 11
2. नया नियम (1:00:43) 12
3. यीशु का पुनरुत्थान (1:05:58) 12

C. छुटकारा (1;08:55) 13
1. वर्तमान जीवन (1:09:12) 13
2. मध्यम अवस्था (1:10:46) 13
3. नया जीवन (1:16:01) 13

4. अनन्त जीवन (1:18:45) 13

A. समयावधि (1:19:31) 14

B. गुणवत्ता (1:25:10) 14

C. स्थान (1:32:10) 14

5. उपसंहार 1:37:12) 14

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 15

उपयोग के प्रश्न 20

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - **पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें** — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - **उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें** — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

1. परिचय (1:01)

उद्धार : उस आशीष की प्राप्ति जिसे मसीह ने अपनी बलिदानी मृत्यु के द्वारा मोल लिया।

2. क्षमा (3:04)

A. पाप की समस्या (3:28)

पाप हमें परमेश्वर की आशिषों से वंचित करता है और उसके श्राप तले रख देता है।

1. पाप की परिभाषा (4:26)

अधार्मिकता : परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन

- अनुरूपता की कमी (कार्य को करने से चूकने का पाप)
- अपराध (गलत कार्य करने का पाप)

व्यवस्था परमेश्वर के सिद्ध चरित्र का प्रतिबिम्ब है।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर के लिए प्रेम उसकी व्यवस्था की आज्ञाकारिता में प्रकट होता है।

2. पाप की उत्पत्ति (9:40)

पतन : जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर के विरुद्ध बलवा किया

जब परमेश्वर ने मानवजाति की रचना की थी तो हम बहुत अच्छे थे।

आदम और हव्वा ने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया और जानबूझकर पाप किया।

3. पाप के परिणाम (12:42)

आदम और हव्वा के पाप के बाद परमेश्वर ने संपूर्ण मानवजाति को दंड और श्राप दिया, जिसका परिणाम यह हुआ :

- आत्मिक मृत्यु

- भ्रष्टता

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- भौतिक मृत्यु

- अनंत कष्ट

B. दिव्य अनुग्रह (16:52)

परमेश्वर नहीं चाहता था कि सारी मानवजाति पाप के श्राप में रहे।

परमेश्वर ने पाप की समस्या के समाधान के लिए छुड़ाने वाले को भेजा—यीशु मसीह।

उद्धार वास्तव में त्रिएकतारुपी है।

1. पिता (18:05)

पिता ने पुत्र को जगत में भेजा और उसे छुड़ाने वाले के रूप में नियुक्त किया।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पिता छुटकारे का एक महान रचनाकार है।

2. पुत्र (21:21)

पुत्र को यीशु, एक बहुप्रतीक्षित मसीहा के रूप में जगत में भेजा गया।

3. पवित्र आत्मा (22:49)

पवित्र आत्मा क्षमा को हमारे जीवन में लागू करता है।

उद्धाररुपी अनुग्रह के आशय :

- विनतियां
- धन्यवाद
- साहस

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. व्यक्तिगत उत्तरदायित्व (25:16)

क्षमा की प्रक्रिया में व्यक्तिगत उत्तरदायित्व का पहलू भी शामिल होता है।

1. शर्तें (26:2)

- परमेश्वर में विश्वास : परमेश्वर की ईश्वरीय सर्वोच्चता को मानना, उसके प्रति वफ़ादारी का समर्पण, और विश्वास कि वह हमारे छुड़ाने वाले यीशु मसीह के कारण हम पर दया करेगा।

जो प्रभु का भय मानते हैं वे उसकी क्षमा को प्राप्त करते हैं।

- टूटापन : पाप के कारण सच्ची ग्लानि, परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करने के कारण सच्चा पछतावा।

2. साधन (34:14)

कभी-कभी मसीही अनुग्रह के साधन और अनुग्रह के आधार के बीच अंतर नहीं कर पाते।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- आधार : बुनियाद या योग्यता

  अनुग्रह का *आधार* मसीह की योग्यता है।

- साधन : यंत्र या प्रक्रिया

  अनुग्रह का *साधन* विश्वास है।

  - प्रार्थना

    प्रार्थना अनुग्रह और क्षमा के लिए परमेश्वर से विनती करने का आम साधन है।

    हम केवल मांगने के द्वारा क्षमा को प्राप्त कर सकते हैं।

    मध्यस्थता की प्रार्थनाएँ क्षमा के असाधारण माध्यमों के रूप में कार्य करती हैं।

    मध्यस्थता : बिचवई; दूसरों के लिए विनती या प्रार्थना

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- संस्कार

  "संस्कार" शब्द का इस्तेमाल ऐतिहासिक रूप से प्रभु-भोज और बपतिस्मा को दर्शाने के लिए जाता है।

क्षमा वह महान आशीष है जिसे हम हमारे पूरे मसीही जीवन में अनुभव करते हैं।

3. पुनरुत्थान (46:58)

जब विश्वास-कथन "देह के पुनरुत्थान" की बात करता है तो वह सामान्य पुनरुत्थान के बारे में बता रहा है।

A. श्राप (47:38)

जब आदम और हव्वा पाप में गिरे तो पाप ने न केवल उनकी आत्माओं को भ्रष्ट किया बल्कि उनके शरीरों को भी, जिसका परिणाम मृत्यु हुआ।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. सुसमाचार (52:19)

पवित्रशास्त्र सिखाता है कि जब मसीह का पुनरागमन होगा तो हमारे शरीर महिमामय हो जाएंगे।

1. पुराना नियम (53:07)

"सुसमाचार" शब्द जिसका अर्थ है "शुभ सन्देश" पुराने नियम से आता है।

जो उद्धार परमेश्वर ने पुराने नियम में दिया वह मसीह की भविष्य की विजय पर आधारित था।

परमेश्वर के लोगों को सिखाया गया था कि परमेश्वर मनुष्यजाति के सब मरे हुए लोगों को जीवित करेगा और उनके कार्यों के लिए उनका न्याय करेगा।

अंतिम न्याय में देहिक पुनरुत्थान भी शामिल है।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. नया नियम (1:00:43)

पुराने नियम और नए नियम में सबसे बड़ा अंतर यह है कि नए नियम में छुड़ाने वाला अंततः आ गया था।

यीशु ने सिखाया कि सामान्य पुनरुत्थान अंतिम न्याय के समय होगा।

3. यीशु का पुनरुत्थान (1:05:58)

यीशु के पुनरुत्थान और विश्वासियों के पुनरुत्थान के बीच संबंध :

- यीशु के साथ जुड़ना

- पुनरुत्थान की निश्चयता

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. छुटकारा (1;08:55)

1. वर्तमान जीवन (1:09:12)

हमारी देहों का पुनरुत्थान हमारे भीतर पवित्र आत्मा के वास करने के द्वारा आरंभ होता है।

2. मध्यम अवस्था (1:10:46)

मध्यम अवस्था के दौरान हमारी आत्माएं मसीह के साथ स्वर्ग में वास करती हैं और हमारे शरीर पृथ्वी पर रहते हैं।

3. नया जीवन (1:16:01)

जब हमारे शरीर सामान्य पुनरुत्थान में पुनः जीवन को प्राप्त करेंगे तो वे एक नए और सिद्ध जीवन को पाएंगे।

4. अनन्त जीवन (1:18:45)

परमेश्वर के सभी विश्वासयोग्य लोग अंत में सिद्ध, आशीषमय, अनश्वर और अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. समयावधि (1:19:31)

वह जीवन जो कभी समाप्त नहीं होगा, अभी आरंभ हो रहा है।

हमें अंतिम न्याय के समय अनन्त जीवन दिया जाएगा।

B. गुणवत्ता (1:25:10)

अनन्त जीवन की मुख्य विशेषता यह है कि हम हमेशा के लिए परमेश्वर की आशीषों में रहेंगे।

C. स्थान (1:32:10)

पवित्रशास्त्र नए स्वर्ग और नई पृथ्वी को हमारे अनन्त स्थान के रूप में दर्शाता है।

5. उपसंहार 1:37:12)

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. पाप की समस्या क्या है? यह कहाँ से आरंभ हुई और इसके परिणाम क्या-क्या हैं?

2. चर्चा कीजिए कि किस प्रकार दिव्य अनुग्रह में त्रिएकता के तीनों व्यक्तित्व शामिल होते हैं?

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. पापों की क्षमा में व्यक्तिगत उत्तरदायित्व क्या भूमिका निभाते हैं?

4. किस प्रकार मनुष्य के पाप में पतन ने न केवल हमारी आत्माओं को बल्कि हमारी भौतिक देहों को भी भ्रष्ट कर दिया?

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. चर्चा कीजिए कि किस प्रकार सुसमाचार, या "शुभ संदेश" हमारे पुनरुत्थान को आश्वस्त करता है?

6. देहिक छुटकारे के तीन चरणों का वर्णन कीजिए, पवित्रशास्त्र के अनुसार हम उन सबका अनुभव कैसे करेंगे?

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. चर्चा करें कि अनन्त जीवन कब आरंभ होता है?

8. स्पष्ट करें कि किस प्रकार विश्वासियों के लिए अनन्त जीवन हमारे अस्तित्व और चेतना को सदैव तक बनाए रखने का विषय नहीं है।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. नया स्वर्ग और नई पृथ्वी क्या हैं और विश्वासी अपनी अनंतता कहाँ बिताएँगे?

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. किन रूपों में व्यवस्था परमेश्वर के चरित्र को दर्शाती है?

2. उन तीन रूपों के बारे में सोचें जिसमें लोग परमेश्वर की आज्ञा को न मानने के द्वारा और परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध काम करने के द्वारा पाप करते हैं।

3. त्रिएकता के तीनों सदस्य हमारे उद्धार के लिए एक साथ कार्य करते हैं। इसका इस बात में क्या अर्थ है कि परमेश्वर ने हमारे पाप में हमसे कैसा प्रेम किया और हमारे उद्धार के बाद भी हमसे प्रेम करता है?

4. किस प्रकार मसीहियों को अपने मसीही जीवनों में टूटेपन और विश्वास की निरंतर आवश्यकता है?

5. किस प्रकार मसीह की योग्यता हमारे उद्धार का आधार बनती है, और किस प्रकार उसमें विश्वास उसकी क्षमा में हमें साहस प्रदान कर सकता है?

6. किन रूपों में प्रार्थना आपके जीवन में अनुग्रह का साधन रही है?

7. किस प्रकार हमारे पुनरुत्थान में हमारी भावी आशा मसीह के पुनरागमन की प्रतीक्षा में पवित्र जीवन जीने में हमारी सहायता कर सकती है?

8. किस प्रकार विश्वासी होने के नाते हमें निरंतर सुसमाचार की आवश्यकता है?

9. अनन्त जीवन का अनुभव अब कैसे किया जा सकता है?

10. किस प्रकार हमारे वर्तमान दुःख अनन्त जीवन की हमारी आशा को बढ़ा सकते हैं?

11. इस अध्याय में आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org